ISSN : 2583-2948

कॉलोनी में कुत्ता

सूर्यबाला
वरिष्ठ साहित्यकार

(साहित्य में व्यंग्य का विशेष स्थान है। शब्दों के माध्यम से जब बात को तीखे ढंग से अवगुणों को बताने के लिए किया जाता है वह व्यंग्य है। व्यंग्य लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कोई भी आसानी से और बिना तैयारी के नहीं उतर सकता। समाज के विद्रूपताओं से पाठकों का परिचय कराने से पूर्व यह भी आवश्यक होता है एक साहित्यकार के लिए वह खुद एक ऐसे सिद्धान्त का अनुपालन करता हो जो आम जन के लिए अनुकरणीय हो। सूर्यबाला हिन्दी साहित्य जगत में अकेली लेखिका हैं जिनहोने व्यंग्य लिखने में महारथ हासिल की है। बेबाकी से अपनी बात को रखने का मधुर ढंग आपका वैशिष्ट्य है। कहानी, उपन्यास के साथ ही साथ सूर्यबाला जी ने व्यंग्य लेखन को शैली से उठाकर विधा में स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। प्रस्तुत है आपका एक व्यंग्य।)

पिछले तीस सालों से लिख रही हूँ पर मजाल है जो साहित्य का कुत्ता भी मेरे घर के आस – पास फटका हो ! आप लोग 'साहित्य का कुत्ता' शब्द पर आपत्ति क्यों नहीं कर सकते। अगर साहित्य समाज का दर्पण है या साहित्यकारों के जीने की शर्त है या तीर्थ भी है, तब भी, कुत्ते कहाँ नहीं होते? हमारे समाज वाले, तीरथों वाले कुत्तों का अक्स साहित्य में पड़ता ही पड़ता है न !

बेशक मेरे घर के आस – पास जो साहित्य का कुत्ता नहीं फटकता, सो तो इसलिए क्योंकि पति की चौकस पहरेदारी रहती है। लेकिन आज सुबह सैर पर निकली तो आँखों पर एतबार न आया। ऐन अपने टॉवर के ठीक नीचे, लंबे कानों और भूरी खालवाला एक शानदार कुत्ता सैर करता दिखाई दिया। साथ में लीश थामें उसका मालिक भी। कुत्ते जैसा शानदार न सही, पर ठीक – ठाक ही था। वैसे सच्ची बात तो यह है कि पहली नजर में कुत्ता ही मालिक की लीश थामे नजर आता था। खैर मालिक से क्या बनना – बिगड़ना था मेरा, वह तो कब से था कॉलोनी में, उसको कौन पूछता था। और कौन सा मैं उस पर साहित्य रचने जा रही हूँ। जैसे इतने आदमजात से वह भी। शान, इज्जत और रुतबा तो इस भूरी खालवाले शानदार कुत्ते से मिली थी हमारी कॉलोनी को।

मुझे देखकर भौंका तो शाम जाने और झेंपने के बावजूद ग्रीवा गर्व से उन्नत हो गई – आह! आ गया अंतत: अपनी कॉलोनी में भी एक कुत्ता और संयोग देखिये कि भौंका भी सबसे पहले मुझी पर। यह सेहरा भी मेरे ही सिर बांधना था। यूं शान तो पूरी कॉलोनी की बढ़ेगी। हमारी कॉलोनी का मिडिल क्लासवाला सेंसेक्स अब उछाल मारकर सामने वाले रूबी टॉवरवालों के सिर पर चढ़कर बोलेगा। जब देखो अपने आधे दर्जन कुत्तों के बल पर इतराती रहती थी। रूबी टॉवरवाली कॉलोनी में कि हम पॉश, सभ्य, सोफिस्टीकेटेड लोग हैं। हमारे यहाँ रात दिन, एक से एक अच्छी नस्लवाले कुत्ते भौंकते हैं। फाटक पर लगी 'कुत्ते से सावधान' वाली चंद्रहार – सी झूलती तख्ती राहगीरों को रश्क से देखने और दुबककर निकल जाने को मजबूर कर देती है। इसे कहते हैं रुतबा और स्टेटस।

तो अब हमारी कॉलोनी में भी कुत्ते भौंकेंगे। रौनक बढ़ेगी। वरना पहले जब भी रूबी टॉवरवाले कुत्ते भौंकते, हमारी तरफ से कोई जवाबी कार्रवाई ही नहीं हो पाती। हम पर घड़ों पानी पड़ जाता। हमें गली – सड़क के कुत्ते के भौंकने, रोने का आधी रात तक इंतजार करना पड़ता था। पलक झपकते उनकी कॉलोनी पॉश साबित हो गई थी, हमारी पिद्दी। अब इंतजार की घड़ियाँ खत्म हुईं। अभी अपनी कॉलोनी में एक कुत्ता आया है। देखा – देखी और आएंगे। सब मिलकर भौकेंगे। एक से अनेक दल बनेंगे। बनेंगे। पार्टियों का गठन होगा। पार्लियामेंट सी बैठकें चलेंगी। सदन के सत्रों सी बनैली आवाज़े गूँजेंगी। लोकतन्त्र में हमारी आस्था और ज्यादा सुदृढ़ होगी। हम गर्व से मस्तक ऊंचाकर, सीना ठोककर कह सकेंगे कि संसार के सबसे बड़े लोकतन्त्र की पार्लियामेंट का विकल्प हमारी कॉलोनी के पास है।

मैंने आँखें फाड़कर देखा, फाटक पर तैनात सबसे खड़ूस चौकीदार सलाम बजा रहा था – पता नहीं कुत्ते को, कुत्ते के मालिक को या कुत्ते की वजह से उसके मालिक को। मैंने साफ – साफ देखा था, कुत्ता चौकीदार पर झपटकर गुर्राया भी था, लेकिन वाचमैन

जानता था कि यह गली – सड़कवाला, लंगड़ी टांग और खुजाती पीठवाला कुत्ता नहीं है, जिसे दुरदुराया जा सके, बल्कि अदब से सलाम बजवानेवाला कुत्ता है।

सुबह -सुबह यूनीफॉर्म में सजे स्कूल बस का इंतज़ार करते बच्चे भी कुत्ते के इर्द – गिर्द कौतुक से इकट्ठे हो गए। सबकी दृष्टि में प्रशंसा थी – वेरी क्यूट डॉगी – अंकल ! नाम क्या है इसका दूसरे लोग भी आते-जाते रुकने लगे। बाल, वृद्ध, अधेड़ नर – नारी सब कुत्ते के बारे में जानकारी ले रहे थे। कॉलोनी में कभी किसी ने किसी के प्रति इतनी उत्सुकता नहीं दिखाई थी, इतनी जानकारी नहीं लेनी चाही थी जितनी इस कुत्ते की। इतने इन्सानों से भी वह रौनक नहीं लगी, वह भाईचारा नहीं स्थापित हुआ जितना इस कुत्ते से। कुत्ता अब हमारी कॉलोनी की शान, रुतबा और स्टेटस सिंबल है।

आखिर क्यों बनाया सभ्य समाज ने अपना स्टेटस सिंबल एक कुत्ते को? क्यों नहीं इन्सानों या पशु – पक्षियों की ही इतर श्रेणियों में से किसी एक को? शायद इसलिए कि कुत्ते को 'कमजोर' पर भौंकने और बलवान से दुम दबाकर भागने या दुम हिलाने की कला आती है या इसलिए कि कुत्ता हड्डी झिंझोड़ने की कला में निष्णात होता है? वफादारी बेशक किसी जमाने में कुत्ते के साथ जोड़ी जाती रही होगी, किन्तु आज तो आदमी की कुत्तों के प्रति वफादारी के किस्से दनादन हिट हो रहे हैं। यह हट्टा – कट्टा मजबूत कुत्ता ही अपनी लीश के सहारे मालिक को खींचे लिए जा रहा है। और बेचारा मालिक पुचकारता, चुमकारता उसके पीछे – पीछे खींचता चला जा रहा है। तो दलित कौन है आदमी या कुत्ता? आज कुत्ते का रुतबा आदमी से नहीं है, बल्कि आदमी अपने रुतबे और स्टेट्स के लिए कुत्ते का मोहताज है, जैसे हर भारतीय अङ्ग्रेज़ी का। अङ्ग्रेज़ी यदि सिर्फ रोजी- रोटी की भाषा होती तो खा- खा। पी – पीकर अघाए लोग अङ्ग्रेज़ी क्यों बोलते? स्टेटस की खातिर ही तो! और इस स्टेटस की महिमा सर्वोपरि है। चौकीदार से लेकर बच्चों तक किसी को सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती। किसी पर दबाव नहीं डाला जाता कि तुम कुत्तेवाले साहब या साहबवाले कुत्ते को सलाम करो, पुचकारो चुमकारो। सब अपनी आंतरिक प्रेरणा से करते हैं।

अर्थात सारा मामला इस आंतरिक प्रेरणा पर आकर समाप्त हो जाता है। और आत्म प्रेरणा ने अब अपने मुहाने बदल दिये हैं। यह इन्सानों का साथ छोड़कर अब कुत्तों के साथ हो ली है। आत्म – सुख, आत्मिक आनंद जैसे खटराग पालने इसने बंद कर दिये हैं। निवृत्त हो ली है इन सब दायित्वों से। सारा काम कोंट्रैक्ट लेबर के जिम्मे कर दिया है। और कोंट्रैक्टर की मनमानी ने श्वान वृत्ति को तगड़ा कमीशन बांध दिया है। शायद उसे समझ में आ गया है कि सिर्फ इंसानी गुणों के सहारे अब जिंदगी नहीं काटी जा सकती। जिंदा रहने के लिए उसे अब श्वान वृत्तियों को अपनाना होगा। जैसे दूसरों के मुंह की रोटी को छीन भागना, सच्चाईयों पर गुर्राते और भौंकते चले जाना आदि। और झूठ, फरेब, जालसाजी के सामने पड़ते ही सब कुछ भूलकर तेजी से दुम हिलाने लग जाना आदि। ये सारे गुण आज के सभ्य विश्व के आदमी में चाहिए – ही – चाहिए। यूं भी सृष्टि के विकास क्रम में सबसे अंत में मनुष्य नहीं बल्कि कुत्ते को होना चाहिए, क्योंकि आज के आदमी का विकसित रूप कुत्ता है।

वह भजन है न – 'अभी लाखों हैं हममें कमी' – सो तो हैं ही कुत्तों की तूलना में, लेकिन मेहनत अर्थात कोशिश करे इंसान तो क्या काम है मुश्किल – अर्थात एक दिन आदमी सम्पूर्ण श्वानतत्व को प्राप्त हो जाएगा। वह दिन अपनी सभ्यता के चरमोत्कर्ष का महापर्व होगा और वह दिन अब दूर नहीं लगता।